द्विचत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः

सीता माहात्म्य

ब्रह्मोवाच

वंशादीन्पालयामास अवतीर्णो हरिः प्रभुः। दैत्यधर्मस्य नाशार्थं वेदधर्मादिगुप्तये॥१॥

मत्स्यादिकस्वरूपेण अवतारं करोत्यजः।

मत्स्यो भूत्वा हयग्रीवं दैत्यं हत्वाजिकण्टकम्॥२॥

वेदानानीय मन्वादीन्पालयामास केशवः। मन्दरं धारयामास कूर्मो भूत्वा हिताय च॥३॥

क्षीरोदमथने वैद्यो देवो धन्वन्तरिर्ह्यभूत्। बिभ्रत्कमण्डलुं पूर्णममृतेन समुत्थितः॥४॥

आयुर्वेदमथाष्टाङ्गं सुश्रुताय स उक्तवान्। अमृतं पाययामास स्त्रीरूपी च सुरान् हरिः॥५॥

ब्रह्मा ने कहा—आर्य वंश के पालनार्थ हरि प्रभु अवतीर्ण होते हैं। वे दैत्य धर्म के नाशार्थ तथा वैदिक धर्मरक्षणार्थ समय आने पर मत्स्यादि अवतार ग्रहण करते हैं। उन्होंने मत्स्यरूपेण आविर्भूत होकर रणदुर्मद हयग्रीव का वध करके वेदोद्धार किया तथा केशव ने मनु आदि का पालन किया। उन्होंने प्राणिहितार्थ कूर्मरूपेण अपने ऊपर मन्दराचल को धारण किया। उन्होंने क्षीरसागर मंथन के समय वैद्य धन्वन्तरी के रूप में अमृतपूर्ण कमण्डलु के साथ क्षीर सागर से उत्थान किया। इन देव धन्वन्तरी ने सुश्रुत वैद्य शिष्य को अष्टांग आयुर्वेद का शिक्षण दिया। भगवान् हरि ने मोहिनी रूप से अवतीर्ण होकर देवगण को अमृत पिलाया॥१-५॥

अवतीर्णो वराहोऽथ हिरण्याक्षं जघान ह। पृथिवीं धारयामास पालयामास देवताः॥६॥

नरसिंहोऽवतीर्णोऽथ हिरण्यकशिपुं रिपुम्। दैत्यान्निहतवान्वेदधर्मादीनभ्यपालयत्॥७॥

ततः परशुरामोऽभूज्जमदग्नेर्जगत्प्रभुः। त्रिःसप्तकृत्वः पृथिवीं चक्रे निःक्षत्रियां हरिः॥८॥

कार्त्तवीर्य्यं जघानाजौ कश्यपाय महीं ददौ। यागं कृत्वा महाबाहुर्महेन्द्रे पर्वते स्थितः॥९॥

इन श्रीहरि ने वराह रूपेण अवतार लेकर हिरण्याक्ष का वध किया। इन्होंने पृथिवी का उद्धार करके देवगण को पाला। इन हरि ने नृसिंहावतार लेकर हिरण्यकशिपु नामक देवशत्रु का वध करके वेद तथा धर्म का पालन किया। वे हरि जमदग्नि के पुत्र परशुराम के रूप में अवतीर्ण हुये थे। उन्होंने २१ बार समग्र धरती को क्षत्रियरहित किया था। क्षत्रियों तथा कार्त्तिवीर्य का वध करके भगवान् परशुराम ने ऋषि कश्यप को भूमिदान किया। यज्ञ करके वे महाबाहु महेन्द्र पर्वत पर स्थित हैं॥६-९॥

ततो रामो भविष्णुश्च चतुर्धा दुष्टमर्दनः। पुत्रो दशरथाज्जज्ञे रामश्च भरजोऽनुजः॥१०॥

लक्ष्मणश्चाथ शत्रुघ्नो रामभार्य्या च जानकी॥११॥

वे भगवान् विष्णु पुनः दुष्टों के दमन हेतु चार अंश में विभक्त होकर दशरथ के औरस से राम, लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुघ्न के नाम से अवतीर्ण हो गये। रामचन्द्र की पत्नी थीं माता जानकी॥१०-११॥

रामश्च पितृसत्यार्थं मातृभ्यो हितमाचरन्। शृङ्गवेरं चित्रकूटं दण्डकारण्यमागतः॥१२॥
नासा शूर्पणखायाश्च छित्त्वाथ खरदूषणम्। हत्वा स राक्षसं सीतापहारिरजनीचरम्॥१३॥
रावणं चानुजं तस्य लङ्कापुर्य्यां विभीषणम्।
रक्षोराज्ये च संस्थाप्य सुग्रीवहनुमन्मुखैः॥१४॥
आरुह्य पुष्पकं सार्द्धं सीतया पतिभक्तया।
सुमहापतिव्रतया सोऽयोध्यां स्वपुरीं गतः॥१५॥
राज्यञ्चकार देवादीन्पालयामास स प्रजाः। धर्मसंरक्षणं चक्रे अश्वमेधादिकान्क्रतून्॥१६॥

राम ने पिता की प्रतिज्ञा के पालनार्थ तथा माता कैकेयी के हितार्थ मन से राज्य का त्याग किया तथा वे शृंगवेरपुर, चित्रकूट, दण्डकारण्य गये। उन्होंने सूर्पणखा राक्षसी की नाक काटी, खर-दूषणादि राक्षस वीरों एवं सीता हरणकारी रावण राक्षसराज का नाश किया तथा रावण के छोटे भाई विभीषण को लंका का राक्षसराज नियुक्त किया। उन्होंने सुग्रीव-हनुमान आदि अनुचरों तथा परम पतिव्रता जानकी के साथ पुष्पक विमान पर बैठ कर राजधानी अयोध्या में आगमन किया। तदनन्तर वे राज्य पर अभिषिक्त होकर देवता तथा पृथिवी पालन करने लगे। उन्होंने धर्म की रक्षा करते हुये अश्वमेधादि यज्ञ भी किया॥१२-१६॥

सुमहापतिव्रतया रेमे रामो यथासुखम्। रावणस्य गृहे सीता स्थित्वापि न हि रावणम्॥१७॥
कर्मणा मनसा वाचा सा गता राघवं विना। पतिव्रता तु सा सीता अनसूया यथैव तु॥१८॥
पतिव्रतायाः सीताया माहात्म्यं कथयाम्यहम्।
कौशिको ब्राह्मणः कुष्ठी प्रतिष्ठानेऽभवत्पुरा॥१९॥
तं तथा व्याधितं भार्य्या पतिं देवमिवार्चयत्।
निर्भर्त्सितापि भर्त्तारं तममन्यत दैवतम्॥२०॥

वे परम पतिव्रता सीता के साथ अत्यन्त सुख से विहार करने लगे। यद्यपि सीता रावण के यहां दीर्घकाल थीं, तथापि वे मन, वाणी, कर्म से राम के सिवाय किसी पुरुष का चिन्तन नहीं करती थीं। जैसी पतिव्रता अनुसूया हैं, वैसी ही सीता हैं। अब पतिव्रता सीता का माहात्म्य सुनो। पूर्वकाल में प्रतिष्ठान पुरी में कौशिक नामक कुष्ठरोगी ब्राह्मण था। उसकी पतिव्रता पत्नी उनकी सेवा देवता मान कर करती थी। व्याधिग्रस्त पति से तनिक घृणा नहीं करती थीं। कौशिक उनका बराबर तिरस्कार करता था, तथापि वे देवता मानकर उसकी सेवा में कोई अवहेलना नहीं करती थीं॥१७-२०॥

भर्त्रोक्ता सानयद्वेश्यां शुल्कमादाय चाधिकम्।
पथि शूले तदा प्रोतमचौरं चौरशङ्कया॥२१॥
माण्डव्यमतिदुःखार्त्तमन्धकारेऽथ स द्विजः।
पत्नीस्कन्धसमारूढश्चालयामास कौशिकः॥२२॥

पादावमर्षणात्क्रुद्धो माण्डव्यस्तमुवाच ह।
सूर्य्योदये मृतिस्तस्य येनाहं चालितः पदा॥२३॥
तच्छ्रुत्वा प्राह तद्भार्य्या सूर्य्यो नोदयमेष्यति।
ततः सूर्य्योदयाभावादभवत्सततं निशा॥२४॥
बहून्यब्दप्रमाणानि ततो देवा भयं ययुः।
ब्रह्माणं शरणं जग्मुस्तामूचे पद्मसम्भवः॥२५॥

एक दिन वे पति की आज्ञा से प्रचुर धन लेकर स्वामी को कंधे पर बैठा कर वेश्यालय ले जा रही थी। मार्ग में माण्डव्य नामक ऋषि को चोर न होने पर भी चोर के संदेह में पकड़कर शूली पर चढ़ा दिया था। माण्डव्य अन्धेरे में शूली पर दुःख भोग कर रहे थे। तभी पत्नी के कंधे पर बैठे कौशिक के धक्के से वे अत्यन्त पीड़ित हो उठे। माण्डव्य ने क्रोधित होकर शाप दिया, "जिसने भी मुझे हिलाया है, वह सूर्योदय होते ही मर जायेगा।" यह शाप सुनकर कौशिक की पत्नी ने कहा—"अब सूर्योदय नहीं होगा।" पतिव्रता के वाक्य के कारण सूर्योदय नहीं हुआ। बराबर रात्रि ही रह गयी। कई दिन तक रात्रि बनी रहने से देवता डरते हुये ब्रह्मा के यहां गये। उन्होंने ब्रह्मा से सभी वृत्तान्त कहा॥२१-२५॥

प्रशाम्यते तेजसैव तपस्तेजस्त्वनेन वै। पतिव्रताया माहात्म्यान्नोद्गच्छति दिवाकरः॥२६॥
तस्य चानुदयाद्धानिर्मर्त्त्यानां भवतां तथा। तस्मात्पतिव्रतामत्रेरनसूयां तपस्विनीम्॥२७॥
प्रसादयत वै पत्नीं भानोरुदयकाम्यया। तैः सा प्रसादिता गत्वा ह्यनसूया पतिव्रता॥२८॥
कृत्वादित्योदयं सा च तं भर्त्तारमजीवयत्।
पतिव्रतानसूयायाः सीताभूदधिका किल॥२९॥

॥इति गारुडे महापुराणे सीतामाहात्म्यं नाम द्विचत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः॥१४२॥

ब्रह्मा ने कहा—"अभी पतिव्रता के तपःतेज के कारण ऋषि का तपःतेज शान्त हो गया। पतिव्रता की महिमा से सूर्य उदित नहीं हो रहे हैं। सूर्योदय न होने से मनुष्यों तथा देवताओं की हानि होगी। अब तुम लोग सूर्योदय की इच्छा से पतिव्रता तपस्विनी अत्रिपत्नी अनुसूया की शरण में जाओ। उनको प्रसन्न करो।" तब देवता पतिपरायणा अनुसूया के पास गये तथा उनको प्रसन्न किया। अनुसूया ने सूर्योदय भी किया तथा कौशिक के प्राण भी बचा दिये। मैंने पतिव्रता माहात्म्य कहा तथापि अनुसूया से भी अधिक पतिव्रता सीता हैं॥२६-२९॥

॥एक सौ बयालीसवां अध्याय समाप्त॥

❖❖❖